समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



कक्षा - 7

हिंदी (पल्लव)

अध्याय – 3

एक तेजस्वी और दयावान बालक

भाग – 2

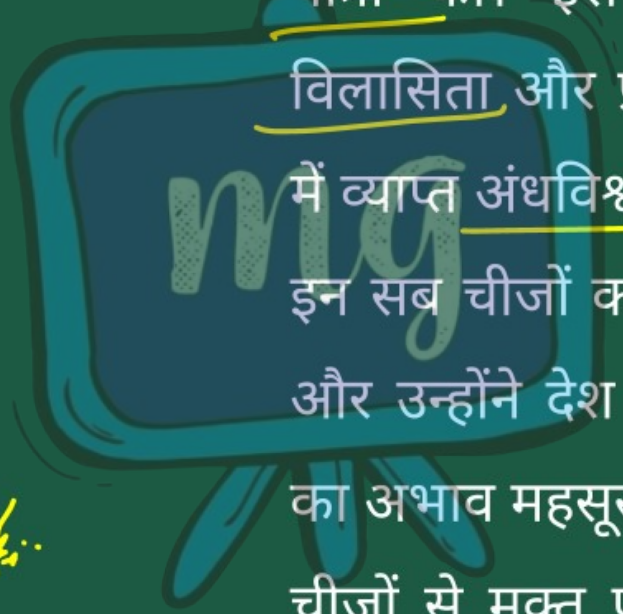
मिताली कुमारी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

फिर भी नरेंद्र ने अपना हौसला बनाए रखा और अपनी साधना व लगन से ज्ञानार्जन करता रहा। विश्व के जाने-माने कोलकाता विश्वविद्यालय से सम्मानीय अध्यापक पद के लिए उसे आमंत्रित किया गया था। लेकिन गरीब, लाचार और बेसहारे लोगों की सेवा करने के लिए उसने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

25 वर्ष की अवस्था में नरेंद्र ने गेरुवा वस्त्र धारण किया। संन्यास लेने के बाद वे स्वामी विवेकानंद नाम से लोकप्रिय हुए।



तत्पश्चात स्वामी विवेकानंद जी ने पूरे भारतवर्ष की यात्रा की। इस यात्रा में उन्होंने राजाओं की विलासिता और प्रजाओं की दरिद्रता देखी। समाज में व्याप्त अंधविश्वासों और कुसंस्कारों को भी देखा। इन सब चीजों का उनके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा और उन्होंने देश में आधुनिक एवं वैज्ञानिक शिक्षा का अभाव महसूस किया। मन ही मन स्वामी जी इन चीजों से मुक्त एक शक्तिशाली भारत का सपना देखने लगे।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

वर्ष 1893 में अमरीका के शिकागो शहर में एक विश्व धर्म सम्मेलन आयोजित हुआ था। उस धर्म सम्मेलन में स्वामीजी ने हिंदू धर्म के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया था। शिकागो पर्लियामेंट ऑफ रिलीजन (Parliament of Religion) में स्वामीजी ने 'प्यारे अमरीकी बहनो और भाइयो' शब्दों के साथ ज्यों ही अपना ओजस्वी भाषण शुरू किया तो 7000 विद्वानों से भरा पूरा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा था।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

आज भी दुनिया भर के लोग उस भाषण को याद करते हैं। इस भाषण के जरिए उन्होंने भारतीय अध्यात्म, सभ्यता और संस्कृति को विश्व भर में पहचान दिलायी थी। सम्मेलन में उनके विचार सुनकर दुनिया के तमाम विद्वान चकित रह गए। अमरीका में उनका भरपूर स्वागत हुआ। भाषण के बाद अमरीकी मीडिया ने उन्हें 'साईक्लोनिक हिंदू' (Cy-clonic Hindu) नाम से नवाजा था।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

उस सम्मेलन के बाद विदेश में उनके भक्तों का एक समुदाय बन गया। अनेक लोग उनके शिष्य भी बन गए।

भारत वापस आकर स्वामीजी ने 'रामकृष्ण मिशन' नामक एक कल्याणकारी संस्था की भी स्थापना की। समस्त पृथ्वी के गरीब, बेसहारे लोगों की सेवा करना इस संस्था का प्रधान उद्देश्य है। आज देश-विदेश में इस संस्था की अनेक शाखाएँ काम कर रही हैं। स्वामीजी एक मानवतावादी संत थे।

उन्होंने मानव की उन्नति और कल्याण को सर्वोपरि माना। स्वामीजी दुनिया के सभी धार्मिक विचारों को महत्व देते थे। उनकी ओजपूर्ण वाणी और उपदेश आज भी समस्त मानव जाति में शक्ति का संचार करता है।

देश की युवा शक्ति पर स्वामीजी को पूरा भरोसा था। इसलिए तन-मन से स्वस्थ होकर देश के भविष्य को बदलने की दिशा में काम करने के लिए आपने पूरी युवा शक्ति का आह्वान किया था।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



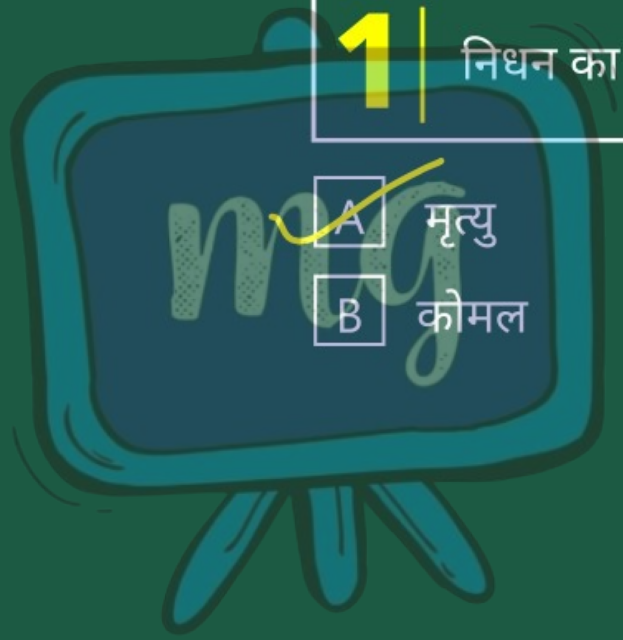
स्वामीजी सिर्फ 39 साल तक ही जीवित रहे। वर्ष 1902 की 4 जुलाई को वेल्लुर मठ में उन्होंने अंतिम साँस ली। आज भी लोग इस महान दार्शनिक, ओजस्वी वक्ता, मानवतावादी संत को श्रद्धा के साथ स्मरण करते हैं। हमारा सौभाग्य है कि हम 2013 ई. में उनके जन्म का 150वाँ वर्ष मनाने वाले हैं। उनकी ही तरह हम भी देश की सेवा करें, यही हमारा परम कर्तव्य है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

मूल्यांकन

Under CSR Support by
ipca | Foundation





1 | निधन का मतलब हैं-

A मृत्यु

B कोमल

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

मूल्यांकन

Under CSR Support by
ipca | Foundation



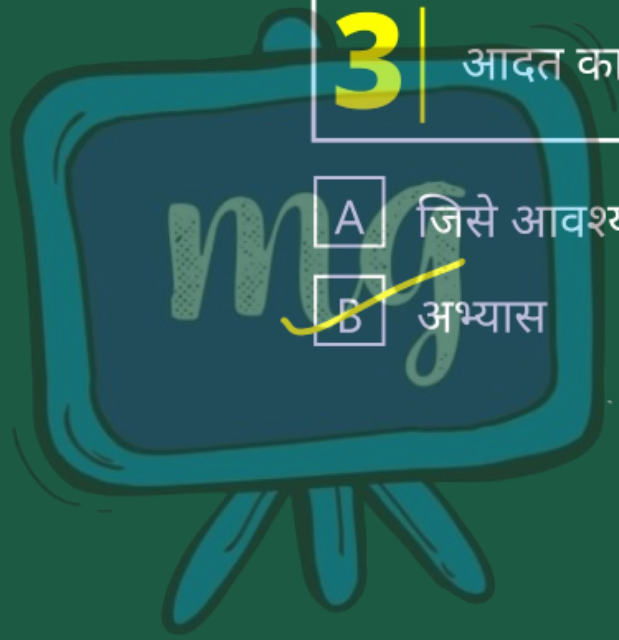
2 नवाजना का मतलब हैं-

A अलंकृत करना

B सबसे ऊपर

मूल्यांकन





3 आदत का मतलब हैं-

A जिसे आवश्यक हो

B अभ्यास